स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान शिक्षा में योगदान

– शोधार्थी

प्रतीक त्रिपाठी (शिक्षा शास्त्र)

कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़

महर्षि दयानन्द जी ने अपने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास के प्रारम्भ में लिखा है – 'अथ शिक्षायां प्रवक्ष्यामः। महर्षि जी ने शिक्षा को ज्ञान माना है, शिक्षा शब्दों में सम्पूर्ण ब्राह्माण्ड के ज्ञान–विज्ञान से सम्बन्धित वैचारिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अर्थात समस्त मानव हितकर प्रवृत्तियां समाहित हैं। महर्षि दयानन्द ने वैदिक भारत की सभ्यता और संस्कृति पर आधारित आधुनिक परिवेश में शिक्षा को बहुत अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार व्यक्ति समाज और राज्य की उन्नति तथा सुख–समृद्धि उसी दशा में सम्भव है जबकि स्त्री–पुरुष सुरक्षित हों, सबको धर्म, अधर्म और कर्तव्य, अकर्तव्य का समुचित ज्ञान हो और विद्या तथा विज्ञारन को सबके हित कल्याण के लिए प्रयुक्त किया जाये।

महर्षि दयानन्द ने शिक्षा की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कहा कि – शिक्षा वह है जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियादि की बढ़ोत्तरी हो और अविद्या आदि दोष छूटे उसको शिक्षा कहते हैं जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्या आदि दोषों को छोड़कर सदा आनन्दित हो सके वह शिक्षा कहलाती है।

इस सन्दर्भ में भारतीय तथा विदेशी विद्वानों का मत है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान सर्वाधिक रहा है उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज 19वीं सदी की केवल मात्र संस्था है जिसने शिक्षा के क्षेत्र को सर्वाधिक प्रमाणित किया है।

स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन दर्शन तथा शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में उन्होनें अपने विचारों से क्रान्ति ला दी थी। जो समाज द्रुतगति से इसाई मिशनरियों के प्रभाव मे आ रहा था, उसे वैदिक संस्कृति के गौरव से परिचित करा कर उन्होनें प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का पुनुरूत्थान किया। किन्तु वैदिक धर्म में जो दंग, पाखण्ड और अविश्वास प्रवेश कर गये थे उनका बलपूर्वक खण्डन कर समाज का महती कार्य किया।

संक्षेप में शिक्षा में उनका योगदान निम्नवत है–

1. स्वामी दयानन्द जी ने सार्वभौमिक शिक्षा का प्रतिपादन किया। उन्होनें कहा कि माता–पिता तथा राज्य के लिए यह आवश्यक है कि सभी को अनिवार्य रूप से शिक्षित किया जाये ताकि स्वयं वेदों का अध्ययन कर उनके अनुकूल आचरण करें व दूसरो द्वारा दी गई व्याख्या को मानने के लिए बाध्य न हो।

2. स्वामी दयानन्द जी ने मुक्ति को जीवन का अन्तिम लक्ष्य और चरित्र निर्माण को शिक्षा का लक्ष्य बताया, किन्तु मुक्ति से उनका तात्पर्य मुख्यतः पापपूर्ण आचरण से मुक्त होना है । चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा द्वारा ईश्वरीय गुणों का विकास आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद जी ने सद्गुणों के विकास के लिये सत्संग आवश्यक बताया है। क्योंकि सद्विचारों वाले व्यक्तियों से विचार–विमर्श करने से विवेक उत्पन्न होता है, जिससे उचित अनुचित का भेद ज्ञात होता है।

3. स्वामी दयानन्द जी ने नैतिक गुणों के विकास में षोड्श संस्कारों के महत्व को स्वीकारा है। उनका मत है कि शुभ संकल्पों के साथ संस्कार सम्पन्न करने से बालक स्वस्थ्य, बुद्विमान एवम् चरित्रवान होता है।

4. स्वामी दयानन्द जी ने प्रारम्भिक शिक्षा में माता–पिता की भूमिका पर विशेष बल दिया है। उनका कहना है कि प्रारम्भिक अक्षर ज्ञान माँ द्वारा ही दिया जाना चाहिए। तदनन्तर पिता को एक आदर्श शिक्षक की भूमिका अदा करनी चाहिए। स्वामी जी ने माता–पिता के आहार–विहार एवम् विचारों की शुद्वता पर भी बल दिया है तथा स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे सरल एवम् सादा जीवन बिताएँ ताकि बच्चे उनका अनुसरण कर सकें।

5. स्वामी दयानन्द जी ने चरित्र निर्माण में समय व परिस्थिति के अनुसार बालक को उचित दण्ड देने का समर्थन किया है। उनका कहना है कि दण्ड देने वाले का हृदय कोमल एवम् सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए, किन्तु बालक को अनुशासित करने के लिए उसे ऊपर से कठोर होना आवश्यक है स्वामी जी ने पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों की खेल पद्वति की आलोचना की है उनके मतानुसार शिक्षा जैसा गंभीर कार्य खेल द्वारा सम्पन्न नही किया जा सकता।

6. स्वामी दयानंद वैदिक संस्कृति के कट्टर समर्थन थे किन्तु उन्होनें वेदों की नई व्याख्या की तथा वेदों की शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करने हेतु नये गुरूकुलों की स्थापना की।

7. स्वामी जी ने सभी वर्णो के व्यक्तियों के लिए वेदाध्ययन का अधिकार दिया। किन्तु उन्होनें यह भी बताया कि वर्ण का निर्धारण जन्म से नही वरन् कर्म से होता है।

8. स्वामी जी ने धर्म के रूढिवादी स्वरूप को त्यागकर परिष्कृत रूप में धार्मिक शिक्षा का अनुमोदन किया। उन्होनें अवतारवाद का खण्डन किया किन्तु ऋषियो के आदर्शो का आदर किया ? वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे तथा ज्योतिष पर विश्वास नहीं करते थे।

9. स्वामी दयानंद जी ने अपनी शिक्षा पद्वति मे आदर्शवादी तथा यथार्थवादी विचारो समन्वय कर मनुष्यों को सर्वहितकारी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।

10. स्वामी दयानंद जी क्रान्तिकारी विचारक एवं समाज सुधारक थे। उन्होनें बाल विवाह का निषेध किया तथा विधवा विवाह को मान्यता दी।

11. स्वामी जी ने अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा को बताया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान् विचारक थे। उन्होने अपनी शिक्षा योजना ,गम्भीरता पूर्वक चिन्तन, मनन के फलस्वरूप बनाई। उन्होंने संपूर्ण जीवन वैदिक धर्म और वैदिक शिक्षा के पुनरूत्थान में लगा दिया तथा उनकी बराबर यह चेष्ठा रही कि वैदिक शिक्षा सर्वसाधारण को उपलब्ध हो तथा भविष्य में एक कुशल नागरिक बनाया जा सके। उनके शैक्षिक दर्शन से वर्तमान शिक्षा में बहुत प्रभाव पड़े है जिससे बालक को भविष्य के लिये एक कुशल नागरिक बनाया जा सकता है। जिससे उसका सामाजिक, चारित्रिक तथा नैतिक विकास किया जा सके।

सन्दर्भ सूची :

1. गुप्ता, एस.पी. (1999) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

2. लाल, रमन बिहारी (2007) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्री सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।